CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध"** which is being submitted by **Amit Kumar Gupta** for the fulfillment of the Award of Degree of Doctor of Philosophy in Hindi to The Maharaja Sayajirao University of Baroda, is a record of bona-fide work carried by his under my Supervision and Guidance at **Department of Hindi, Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara.** THe mater presented in the thesis is independent, original and has not been submitted for the award of any other degree.

Date: **31-12-2022**

Place : **Vadodara**

Guide

31-12-2022

Prof. K.V. Ninama

Professor

Department of Hindi, Faculty of Arts,

The Maharaja Sayajirao University of Baroda,

Vadodara

31/12/2022

Head

Department of Hindi

Prof. KALPANA GAVLI
Head & Professor
Department of Hindi, Faculty of Arts
The Maharaja Sayajirao University of Baroda
Vadodara - 390 002

31/12/22

Dean

Faculty of Arts

FACULTY OF ARTS
The M.S. University of Baroda
Vadodara - 390002

The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara.

DECLARATION

I hereby declare that the thesis entitled **"प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध"** which is submitted here with to The Maharaja Sayajirao University of Baroda, for the fulfillment of the award of the degree of Doctor of Philosophy in Hindi is the result of the work carried out by me under the able Guidance of **Dr. K.V. Ninama, Professor,** Department of Hindi Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara.

अमित कुमार गुप्ता

Researcher

Amit Kumar Gupta

Registration No.: F0A1510

Date of Registration: 25/01/2020

Date: 31/12/2022

Place : Vadodara

CERTIFICATE FOR ARTICLE

Dr. K.V. Ninama
Professor, Hindi Department
The Maharaja Sayajirao University of Baroda,
Vadodara-390002 (Gujarat) India
Accredited Grade "A" by NACC

Date: 31-12-2022

CERTIFICATE

This is to certify that **Amit Kumar Gupta** has conducted a research work for Ph.D. titled **"Pravasi Hindi Sahityakar Ramdev Dhurdhar Ke Upanyaso Me Bharatiy Sanskriti Evam Parivesh Bodh" "प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध"** at Department of Hindi, Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara. He has two publications related to his subject.

1. मॉरीशस के गघ साहित्य में प्रवासी भारतीयों का विकास (समसामयिक सृजन, संपादन डॉ. महेन्द्र प्रजापति – संपादन सहयोग रीमा प्रजापति, वर्ष-१०, अंक-१ जुलाई सितम्बर २०२०, पृ. १६६-१६८)
2. मॉरीशस में हिंदी व गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति (संपादक-प्रो. प्रसून दत्त सिंह, डॉ. फूल चन्द, प्रधा संपादक - डॉ. अश्विनी महाजन, वर्ष १३, अंक-१, जनवरी-फरवरी २०२१, पृ. २४८६-२४८८)

31-12-2022

Guide

Prof. K.V. Ninama

Professor

Department of Hindi, Faculty of Arts,

The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara

CERTIFICATE FOR ANTI PLAGIARISM

This is to certify that the Ph.D. Thesis entitled **"प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध"** submitted by Amit Kumar Gupta has been checked for anti-plagiarism test by Authenticate software provided by The M.S. University of Baroda. After checking, it is found that 1% of similarity and is below the allowable plagiarism notified by the University Grant Commission. This research work has been carried out by **Amit Kumar Gupta** under supervision, **Department f Hindi, Faculty of Arts, The M.S. University of Baroda.**

31-12-2022

Guide

Prof. K.V. Ninama

Professor

Department of Hindi,

Faculty of Arts,

The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara

Prof. Kanubhai V. Ninama
Department of Hindi, Faculty of Arts
The Maharaja Sayajirao University of Baroda
Vadodara - 390002.

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

वडोदरा (गुजरात)

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

सत्यं शिवं सुन्दरम्

घोषणा-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात) के कला संकाय (हिन्दी विभाग) की पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध **प्रो. कनुभाई विछियाभाई निनामा** के निर्देशन में सम्पन्न किया गया, जिसका शीर्षक **"प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासो में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध"** है। मैं यह घोषणा करता हूँ कि यह मेरा स्वयं का मौलिक कार्य है। मेरी जानकारी के अनुसार इस शोध-शीर्षक पर विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय तथा किसी अन्य संस्था एवं पूर्व में इस प्रकरण पर कोई शोधकार्य नहीं किया गया है।

अमित कुमार गुप्ता

शोधार्थी

अमित कुमार गुप्ता

दिनांक: ३१/१२/२०२२

स्थान: वडोदरा

प्राक्कथन:-

कहीं किसी स्थान पर सुनी हुई निम्नलिखित पंक्तियाँ बार-बार याद आती रहती हैं -

'एक विघनन से ना बढ़े, यह विघनन बिदकाय।

पर बिघनन को बेधकर, बिरला चढ़ता जाय।।

विध्नों के चक्रव्यूह को भेदकर निकल जाना और इस प्रकार सफलता के शिखरों की तरफ अग्रसरित होकर उन्हें सर करना इस दुनिया में विरल व्यक्तियों का कार्य है। यह कार्य वही व्यक्ति पूर्ण रूपेण या सुचारू रूप से सार्थक कर सकता है, जो अपने कार्य में पूरी तरह से निमग्न हो जाता है ; उसमें डूब जाता है। यहाँ डूबने वाला ही तैरता है। बड़ा विचित्र विधान है।

साहित्य की साधना भी कुछ इसी प्रकार का ही कार्य है, जिसमें डूबे बिना कुछ प्राप्त करना नामुमकिन है। प्रारम्भ से ही मुझे साहित्य के प्रति रुचि थी। उसमें भी 'प्रवासी साहित्य' के प्रति विशेष। साहित्य का यह अनुराग ही मुझे हिंदी साहित्य की ओर ले आया। मेरा जन्म बनारस के पास कनकपुर नामक गाँव की पिछड़ी जाति की उपजाति 'तेली' में हुआ। परिवार तथा परिवेश में शिक्षा का माहौल न था, तथापि माँ सरस्वती की कृपा रही कि मैं इस मकाम तक पहुँच पाया हूँ। ई.2013 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से हिन्दी मुख्य विषय के साथ बी.ए. किया। तत्पश्चात 2015 में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी से हिंदी में एम.ए किया। 2017 में.महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से बीएड किया, वर्ष 2018 में डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा से मैंने एम. फिल हिंदी में किया। उसके बाद मुझे बड़ौदा आना हुआ। बड़ौदा महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्रो. कल्पना गवली से मेरा परिचय हुआ। उनकी महती प्रेरणा से मैंने प्रो. (डॉ.) कनुभाई वी.निनामा का संपर्क किया। उन्होंने मुझे उनके मार्गदर्शन में शोध-कार्य करने की अपनी इच्छा प्रस्तुत की। डॉक्टर साहब में शोध -छात्रों के प्रति एक विशेष अनुराग एवं अनुकंपा का भाव है ,यह मैंने सुनकर रखा था। मिलने पर इस तथ्य का साक्षात्कार हुआ। मेरा विचार

उपन्यास-साहित्य पर कार्य करने का था, उसमें भी प्रवासी साहित्यकार रामदेव धुरंधर हाईस्कूल के दिनों से मेरे प्रिय लेखक रहे हैं। उनके उपन्यासों में हमें एक मानवीय संस्पर्श मिलता है। मेरे मन में यह बात बैठ गयी थी कि रामदेव धुरंधर हमारे लेखक है- भारतीय संस्कृति के, मॉरीशस की संस्कृति के दुःखी, पीड़ित गिरमिटिया मजदूरों के, श्रमिकों के, बच्चों के, पीड़ित स्त्रियों के।

रामदेव धुरंधर मॉरीशस में हिंदी कथा-साहित्य के मेरुदण्ड है। हिंदी कथा-साहित्य को उन्होंने जो गौरव और गरिमा प्रदान किया है, उसका महत्व अपरिहार्य है। उनके कथा-साहित्य में हमें मानव-चरित्र की पहचान प्राप्त होती है। मानव रहस्यों को उद्घाटित करना उनका उद्देश्य था और उपन्यास उनकी इस अवधारणा पर खरे उतरते हैं।

शोध कार्य की ओर विधिवत अग्रसरित होने से पूर्व शोध-प्रविधि तथा शोध प्रक्रिया से सम्बद्ध कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अवलोकन करना जरूरी था। इसलिए डॉ. नगेन्द्र, डॉ. रविन्द्र श्री वास्तव, डॉ. उदयभानुसिंह, डॉ. के.का.शास्त्री जी इत्यादि विद्वानों के इस विषयक ग्रन्थों को देखा गया। इसके अलावा विषय -पंजीकरण के पूर्व डॉक्टर साहब ने व्यवहारतः कुछ शोध-प्रबंधों के माध्यम से मुझे शोध की बारीकियों तथा उसकी रचना -प्रक्रिया से परिचित करवाया। इसके पश्चात दिनांक 25-01-2020 को मैं 'प्रवासी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध' विषय को लेकर पंजीकृत हुआ। पंजीकरण के पूर्व डी. आर. सी. तथा एफ.एल.आर. सी. तथा उसके बाद के दो-तीन वर्षों के कठोर अनुशासित सारस्वत अध्यवसाय के उपरांत आज इस सफल, सुन्दर स्थिति तक पहुँच पाया हूँ कि इस शोध-प्रबंध को प्रस्तुत कर सकूँ। मैंने इस शोध-प्रबंध को निम्नलिखित छः अध्यायों में विभक्त-नियोजित किया है :-

(1) प्रवासी हिंदी साहित्य

(2) रामदेव धुरंधर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(3) रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध

(4) रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध

(5) रामदेव धुरंधर के उपन्यासों की समस्याएँ

(6) रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में कला पक्ष एवं भावपक्ष

उपसंहार, संदर्भ ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ, संगोष्टि-प्रमाण पत्र,आलेख

प्रथम अध्याय जिसमें आलोच्य विषय प्रवासी हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि को विश्लेषित करने का प्रयास किया है| साहित्य की सभी विधाओं में प्रवासी हिंदी साहित्य को स्थान प्राप्त हुआ है। दूसरे अध्याय में मॉरीशस के प्रसिद्ध साहित्यकार के व्यक्तित्व एवं उनके साहित्य का गहन अध्ययन किया गया है।तीसरे अध्याय रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेशबोध के अन्तर्गत बिहार और उत्तर प्रदेश से डेढ़ सौ वर्ष पहले वहाँ अंग्रेजों द्वारा लाखों गिरमिटिया मजदूरों को ले जाया गया था। वे लोग साथ में अपनी भारतीय संस्कृति को भी ले गए थे, उनका यहाँ अवलोकन किया गया है।

चौथे अध्याय में रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेशबोध के अन्तर्गत उनके बाकी उपन्यासों की कथावस्तु के आधार पर भारतीय संस्कृति का विश्लेषण किया गया है। पाँचवे अध्याय में रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में चित्रित गिरमिटिया मजदूरों की विभिन्न समस्याओं का मूल्यांकन किया गया है। छट्ठे अध्याय के अन्तर्गत उनके उपन्यासों में निरूपित भाषा -शैली का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

अंत में उपसंहार के अन्तर्गत सारे शोध-प्रबंध का समाहार प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय के अंत भाग में प्रबंध की उपलब्धियों तथा उसकी भविष्यत संभावनाओं को बहुत संक्षेप में रखा गया है।

अपनी शक्ति-मति ,बुद्धि-प्रतिभा तथा शोध-अनुसंधान -दृष्टि -सामर्थ्य की सीमाओं से मैं पूर्णतया अभिज्ञ हूँ, अतः इस कार्य में यदि कोई क्षति या त्रुटि रह गई हो तो मैं विद्वानों तथा इस क्षेत्र के अध्येताओं के प्रति मैं प्रथमतः नत मस्तक हूँ -क्षमस्व। यदि मेरे इस छोटे प्रयत्न से शोध-अनुसंधान तथा ज्ञान के क्षेत्र में किंचित मात्र भी वृद्धि हुई है

और भविष्य के अध्येता या अनुसन्धितसु अल्पातिअल्प मात्रा में भी लाभान्वित और दिशानवित होते हैं तो मैं अपने इस सारस्वत यज्ञ को सार्थक समझूंगा।

यहाँ उन सभी महानुभावों, मित्रों, अभिभावकों तथा सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ कि जिनसे मैं प्रत्यक्ष तथा परोक्ष ढंग से लाभान्वित या प्रोत्साहित हुआ हूँ| इनमें प्रथमतः मेरे माता-पिता श्री मंसाराम गुप्ता तथा श्रीमती मुन्नीदेवी, भाई संदीप कुमार गुप्ता, स्नेही भाई श्री रंजीत कुमार गुप्ता, मेरी बहन रीता गुप्ता, नेहा गुप्ता, आरती गुप्ता, काशी विद्यापीठ के सभी मेरे गुरुजन, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के सभी गुरुजन जिनमें हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो.कल्पना गवली, प्रो. कनुभाई निनामा, प्रो.सन्नो पाण्डेय, प्रो. डी. पी. जाड़ेजा, प्रो.दक्षा मिस्त्री, प्रो.लता सुमन्त, डॉ. एन .एस. परमार, डॉ. अज़हर ढेरिवाला, डॉ. माया प्रकाश पाण्डेय, डॉ. मनीषा ठक्कर, डॉ. अनिता शुक्ला, मेरे सहयोगी मित्र राजेश सिंह, पिन्टू यादव, अंजना अग्रहणी, बिना चिक बड़ाईक, सुमन फुल्लारा। इस शोध-प्रबंध के टंकण वान्या पब्लिकेशन शुभम वाजपेई कानपुर, पंकज भाई, एस भाई, कला संकाय के डीन प्रो.आध्या सक्सेना इन सबसे मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिलता रहा है। अतः इनके प्रति मैं श्रद्धा और कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ |

हमारी परंपरा में गुरु को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वह ब्रह्मा भी है, विष्णु भी है, महेश भी है। कबीर साहब ने तो गुरु और गोविंद में से गुरु को अधिक महत्व दिया है। शोध-प्रक्रिया में मार्गदर्शक (Guide) गुरु-स्थान पर होते हैं।मेरा यह कार्य प्रोफेसर डॉक्टर कनुभाई निनामा साहब के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ है। डॉक्टर साहब मेरे विद्या गुरु और चेतना गुरु दोनों हैं। अपनी शिष्य वत्सलता, ज्ञान-निष्ठा, वस्तु-निष्ठता, पूर्णता का आग्रह ये सब विभाग तथा विश्वविद्याल के परिवार में जग-जाहिर है। अतः मैं पूर्णतया श्रद्धावनत हूँ।

मेरे गुरु हमेंशा कहते हैं कि पी एच.डी. उपाधि हेतु किये गये इस तरह के कार्य तो शोध-अनुसंधान की दिशा में उठाया गया एक कदम मात्र है। एक बड़ी सुदीर्घ यात्रा है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मैं इस दिशा में सदैव अग्रसरित तथा तत्पर रहूँ। मेरे

इस शोध कार्य की संपन्नता से मैं अनहद आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। अन्त में जयशंकर प्रसाद की इन पंक्तियों को प्रस्तुत करता हूँ -

'इस पथ का उद्देश्य नहीं है ,श्रांत भवन में टिक रहना,

किन्तु पहुँचना उस सीमा तक ,जिसके आगे राह नहीं |'

दिनांक : ..... विनीत

(अमित कुमार गुप्ता)